वरिष्ठ मलयालम कवि अक्कितम से डॉ. आरसु की बातचीत

साहित्य अकादमी तथा केरल के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार एषुत्तच्छन से सम्मानित श्री अक्कितम मलयालम साहित्य के वरिष्ठ कवि है। प्राचीनता और अर्वाचीनता का संगम उनकी कृतियाँ की खूबी है। संस्कृत भाषा में गहरी पैठ होने के कारण वेद उपनिषदों का गहरा प्रभाव उनकी कृतियों में देखा जा सकता बीसवीं सदी का इतिहास, चकनाचूर दुनिया, बलिदर्शनम, स्पर्श मणिल धर्म सूर्य, अन्तिमहाकाल, प्रतिनिधि कविताएँ आदि उनकी बहुचर्चित कृतियाँ हैं। ज्ञानपीठ ने वर्ष 2009 में उमेश चन्द्र चौहान द्वारा अनूदित प्रतिनिधि कविताओं का अनुवाद प्रकाशित किया है। यहाँ प्रस्तुत है मलयालम के प्रसिद्ध विद्वान अक्कितम जी से बातचीत के कुछ अंश।

आरसु : *आप अस्सी वर्ष के हो गये। अशीतिः एक स्मरणीय और सार्थक प्रसंग है। अब कुछ पुरानी स्मृतियाँ मन में प्रबल बन जाएँगी न! आपने कहा था अच्छे ताल-लय के साथ माँ रामायण का पारायण करती थीं। इसका असर आपके मन पर पड़ा। परवर्ती जीवन में इस प्रेरणा का प्रभाव कैसे पड़ा?*

अक्कितम : संगीत और भक्ति की अभिन्नता मन को उद्दीप्त करेगी। बचपन में मेरे मन में यह बोध पैदा हो गया था। वह परिवेश मिलने के कारण ही पच्चीस साल की उम्र में उपनिषद मन्त्र के प्रति मेरा मन आकृष्ट हो गया था, 'एषां भूतानाम् पृथ्वीरसः' मन्त्र बहुत प्रेरक लगा था। काव्य-यात्रा में वह मेरा मार्गदर्शन करता रहा।

आरसु : *आपकी प्रथम पंक्ति का प्रसंग स्मरणीय है। मन्दिर की दीवार पर बुझे कोयले से आपने वह पंक्ति लिखी थी। आपका असन्तोष ही उस पंक्ति का मूल तत्व था। अस्सी वर्ष की स्मृतियों में उसको भी स्थान मिलेगा न?*

अक्कितम : कुछ लोग मन्दिर की दीवारों पर अश्लील बातें लिखते थे। ऐसे चित्र भी बनाते थे। यह देखकर मेरा बाल मन शान्त न रह सका। वह विद्रोही हो उठा। मेरी पंक्ति का आशय यही था। मन्दिर की दीवार को गन्दा करने वालों को ईश्वर आकर सजा देगा। उनका जीवन बर्बाद हो जाएगा। पंक्ति के नीचे मैंने अच्युतन उण्णि नाम भी लिखा था। इस अनुष्टुप छन्द को देखकर मैं स्वयं चकित हो गया। सात-आठ साल के हम उम्र बच्चों ने मुझे बधाई दी थी। 1974 ई. में मुझे साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला था। अपनी आरम्भकालीन पंक्तियों का अर्थ मैंने उमाशंकर जोशी को बताया था। उन्होंने तब 'I have noted the poem you have quoted' कहकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। उसमें कविता का बीज था।

अक्कितम : मैंने पहले मंगल श्लोक लिखा था। विवाह मंगल श्लोक उन दिनों पत्रिकाओं में छपते थे। टी. एस. भट्टतिरिप्पाद के विवाह के अवसर पर मैंने यह श्लोक लिखा था। मंजरी छन्द में टैगोर

के बारे में भी कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं। राजर्षि में ये कविताएँ प्रकाशित हुई थीं। नटुविलपा कलमी नाम से कुछ लेख भी प्रकाशित हुए थे।

आरसु : *उन दिनों नम्बूदिरी परिवार रूढ़िवादी परम्परा के कट्टर समर्थक थे। सुधार के लिए कुछ परिश्रम भी हुआ था। उस आन्दोलन को किसने नेतृत्व दिया था?*

अक्कितम : जी हाँ, तब नम्बूदिरी परिवारों में रूढ़िवाद की जड़ें जम गई थीं। स्त्रियों को छाती पर कपड़ा पहनने का हक नहीं मिला था। इसके खिलाफ आन्दोलन चलाया गया था। 'योगक्षेम सभा' का गठन हुआ। वी.टी. भट्टतिरिप्पाद, ई.एम.एस. नम्बूदिरीपाद और वी.टी. रामन भट्टतिरिप्पाद इसके नेता थे। एक नवोत्थान आन्दोलन बन गया। 1941 में 'योगक्षेम सभा' का पुनर्गठन हुआ। नम्बूदिरी युवक तथा युवतियाँ इस आन्दोलन के सन्देशवाहक बन गये। राजनीतिक दृष्टि अलग होने पर भी समाजसुधार के लक्ष्य की पूर्ति के लिए वे इकट्ठा हो गए। व्यक्ति के मन की पवित्रता की समाज की पवित्रता है, यही उनका दृष्टिकोण था। स्वतन्त्रताप्राप्ति के बाद भी सनातन धर्म के प्रचार में वी.टी. भट्टतिरिप्पाद लगे रहे। मैंने उसमें सक्रिय ढंग से भाग लिया।

आरसु : *हम साहित्य की ओर मुड़ेंगे। कई पूर्वजों से आपको प्रेरणा मिली है। इनमें कौन प्रमुख हैं?*

अक्कितम : संस्कृत में व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, भर्तृहरि, जयदेव और मेल्पत्तूर प्रमुख हैं। अंग्रेजी कवियों में शेक्सपियर, शैली, कीट्स, वर्डसवर्थ, लांग फेलो, वाल्ट विटमैन, ऑस्कर वाइल्ड, इलियट मुझे पसन्द हैं। मलयालम में एषुत्तच्छन, कुमारनासन, वल्लत्तोल, उल्लूर, नालाप्पाट्टु आदि प्रमुख हैं। इटश्शेरी गोविन्दन नायर मेरे गुरु थे।

आरसु : *मलयालम साहित्य में पोन्नानी मंडल के साहित्यकारों की चर्चा होती है। आप भी इसमें शामिल हैं। इसके बारे में कुछ बताएँगे?*

अक्कितम : पोन्नानी मंडल के साहित्यकारों में कई कवि, कथाकार और समीक्षक शामिल हैं। महाकवि वल्लत्तोल यहाँ आकर रहे थे। नालाप्पाट्टु नारायण मेनन तथा बालामणि अम्मा भी इस साहित्यिक परिवार के सदस्य थे। एम.टी. वासुदेवन नायर इस परिवार की परवर्ती पीढ़ी के साहित्यकार हैं।

आरसु : *संस्कृत में आपको शिक्षा मिली थी। मलयालम में कविता लिखने के लिए यह शिक्षा आपको कितनी प्रेरक और उपयोगी लगी?*

अक्कितम : गुरुकुल शिक्षा, ऋग्वेद संहिता का पारायण व एषुत्तच्छन की रामायण का पारायण, इस बारे में तीन प्रमुख पड़ाव थे। यही मेरी कविता के स्रोत हैं। वेदाध्ययन से संस्कृत के सारे शब्द सुपरिचित हो गए। फिर गाँव के अक्षरश्लोक प्रेमियों का सम्पर्क भी मुझे प्रेरक लगा।

आरसु : *अंग्रेजी में भी आपने कुछ अनुवाद किये हैं। यह दक्षता कैसे मिली?*

अक्कितम : इंटरमीडिएट क्लास के अंग्रेजी प्राध्यापक एम.पी. शिवदास मेनन ने मुझे अंग्रेजी में लिखने का साहस प्रदान किया था। बाद में स्वामी चिन्मयानन्दजी के गीता व्याख्यान भी सुने। 1956 में मुझे कालीकट आकाशवाणी में नियुक्ति मिली थी। वहाँ मैं Script Writer था। तब मलयालम तथा संस्कृत की कुछ रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी में करना पड़ा था। व्याकरण नियमों पर अधिक बल न देकर अंग्रेजी में लिखने लगा था।

आरसु : *आप करुणा, अहिंसा और शान्ति पर बल देते हैं। खटमल को आग में डालकर मारने के बाद आए विचारों का आपने कहीं उल्लेख किया है। वह घटना क्या है?*

अक्कितम : बचपन में सुबह जागकर उठने पर कम्बल से खटमलों को पकड़कर लालटेन के ढक्कन पर डालता था। एक बार उसके शरीर फटने की आवाज सुनी तो मैं चौंक उठा। मैं उसको जीवन तो दे नहीं

सकता, तब उसका जीवन लेना भी उचित नहीं है। यह विचार मेरे मन में आया। तब मैंने एक दृढ़ निश्चय किया कि मैं भविष्य में हिंसा नहीं करूँगा। वही निश्चय अहिंसा-ममता के रूप में विकसित हुआ। सशस्त्र क्रान्ति से समाजवाद प्राप्त करने का तरीका मुझे मंजूर नहीं हुआ।

आरसु : *कविता के जन्म के बारे में आपका अनुभव क्या है? मानस से कागज तक की प्रक्रिया बताइए?*

अक्कितम : पुशारी रामन मेरी एक बाल कविता है। उसको उदाहरण बनाकर स्पष्ट करूँगा। इसमें बारह पंक्तियाँ हैं। सोते समय मैंने इसकी पंक्तियाँ गायीं। अन्तिम पंक्ति के हास्य के कारण मैं हँस पड़ा। वह पंक्ति थी—'क्या काशी तेरी ससुराल है?' मैंने उठकर बत्ती जलायी। फिर सोच-सोचकर 12 पंक्तियाँ लिखीं। तभी एक बात समझ में आयी। मैं नहीं लिखता। मेरे अन्दर से कोई दूसरा लिखता है। मैं बता नहीं पाऊँगा कि वह आदमी कब जाग उठता है। उसके जागने पर ही सफलता मिलती है। काव्य-रचना की कठिनाई वह सँभाल लेता है। अपने लिए अज्ञात बातें भी मैं लिख जाता हूँ। अन्तर्दृष्टि खुलने जैसा अनुभव होता है। यह काव्य-रचना के पहले या बाद में या बीच में होता है।

आरसु : *'बीसवीं सदी का इतिहास' आपका एक प्रसिद्ध काव्य है। उस सदी का आधा भाग भी तब नहीं गुजरा था। आपने कहा था "मेरे मन की प्रबुद्ध प्रेरणा पर प्रश्न डालते हुए अवचेतन में उमड़ आए शब्द इस कृति में हैं।" यह काव्य आशंकाओं की भट्टी है। अब वह जमाना इतिहास का हिस्सा है। आप उसके बाद की सदी में भी रचनारत हैं। उस काव्य पर अब आप क्या सोचते हैं?*

अक्कितम : वह कृति लिखते समय मन में जम गयी आशंकाएँ बाद में सच्चाई के रूप में बदल गयीं। 1917 से 1987 तक के सात दशकों में दुनिया ने क्या देखा? हिंसा के मार्ग पर आगे बढ़कर मुक्ति पाने के परीक्षण में विश्व के कई राष्ट्र निमग्न हो गये। मजदूर और पूँजीपतियों के संघर्ष से वे राष्ट्र शान्ति की ओर लौट नहीं पाएँगे, ऐसा लगा। संयुक्त राष्ट्र संघ और यूनेस्को जैसे संगठन इसकी मिसाल हैं। हर सामाजिक क्रान्ति से एक आध्यात्मिक स्तर भी जुड़ जाना चाहिए तभी क्रान्तिकारियों में एक समर्पण-भावना आएगी। यही मेरी मान्यता है। Matter is the derivative of consciousness इस सोच ने विज्ञान के विश्वास को बदल डाला है।

आरसु : *ऋषित्व और कवित्व के बीच के सम्पर्क पर आप क्या सोचते हैं?*

अक्कितम : असल में अद्वैत और सौन्दर्यशास्त्र के बीच की एकस्वरता को 'ऋषित्व' कहते हैं। भारतीय सौन्दर्यशास्त्र और बिम्ब उपासना आनन्दवाद के रूप में इस बिन्दु पर मिल जाते हैं। ईश्वरीय बिम्ब, काव्य-बिम्ब के समान आनन्दात्मक है। यही सोच ऋषित्व है। कहीं-कहीं इसका अभाव होता है। अर्थ-बोध और छन्द-बोध के बिना आगे बढ़ती पत्रकारिता को साहित्य मानने की प्रवृत्ति आज व्यापक बनती जा रही है। अरविन्द के अनुसार कविता मन्त्र बनेगी। सहृदयता का विकास होना।

आरसु : *हक्सली ने धीर नूतन संसार का विचार सामने रखा। आपके एक काव्य का शीर्षक चकनाचूर संसार है। क्या आपके मन में आज धीर नूतन संसार की आशा अंकुरित होती है?*

अक्कितम : क्या भविष्य आज के तमाम तमोगुण को मिटा सकेगा? यह प्रश्न मैं अपने आप से भी पूछता हूँ।

आरसु : *एक आलोचक ने लिखा था, मिस्टर अक्कितम आप अपने विवेक को क्रान्ति भावना के ढाँचे में क्यों नहीं ढालते?*

अक्कितम : चौथे दशक के अन्त में मेरी कविता में क्रान्ति भावना हावी हो उठी थी। बाद में मैं उस मार्ग से हट गया और वह आलोचक क्रान्ति के विचारों में फँस गया। प्रकृति में सब कुछ परिवर्तनशील है। यही मार्क्स का विचार था। भारतीय दर्शन कहता है कि काल ही अजेय गुरु है। बीसवीं सदी का इतिहास में मैंने क्रान्ति को विवेक के ढाँचे में डाला है। तेल लगाना ठीक है लेकिन सिर को भूलकर ऐसा करना अनुचित है। मनुष्य के दुःख को हल्का करने के लिए मनुष्य को केले के समान काटने का तरीका सही नहीं है।

आरसु : *'अश्रुकण का सौरमंडल' यह आपका अभिनव तथा मौलिक प्रयोग है। यह परदुःख के विवेक की ओर संकेत करता है। यह दिशा-संकेत आपको कैसे मिला था?*

अक्कितम : यह परदुःख विवेक मुझे पिताजी और उनके बड़े भाई से मिला था। काका के चार लड़के किशोरावस्था

में मर गये थे। लड़का पैदा न होने पर कुल नहीं टिकेगा। यही उस समय का विश्वास था। वह सबसे बड़ा विघ्न था। दादाजी हमेशा रोते रहते थे। दो बार उन्होंने पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया। एक बार मन्त्रोच्चारण गलत हो गया। एक बसन्त में एक बार ही यज्ञ हो सकता था। जब काकाजी के पुत्र यूँ ही मर गये तब उन्होंने अपने छोटे भाई से विवाह करने को कहा।

आरसु : *'बलिदर्शन' को साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला था। इसमें आपने महाबलि की प्रस्तुति नये सिरे से की थी। कवि की कामना को पात्र यहाँ कहाँ तक मानता है?*

अक्किकतम : मैंने अपनी भावना में जो चित्र देखा था उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति यहाँ नहीं हुई। दरभा (एक खास घास) शरीर पर पड़ने के कारण ज्यादा खून आँख में जम गया था। यह चित्र कविता में नहीं आया। इसका कारण बताऊँगा। पात्र कवि की इच्छा को नहीं मान रहा था। कृति की भूमिका में मैंने यह बात स्पष्ट की थी।

आरसु : *यह कथा चिर-पुरातन है लेकिन आपकी दृष्टि नयी है। पुनराख्यान का आधार क्या था?*

अक्किकतम : महाबलि ने भूमि दान में दे दी थी। यह कहानी मैंने बचपन में ही सुनी थी। दान देने पर धोखा खाएगा, पुरोहित शुक्र ने यह उपदेश बलि को दिया था। धोखा खाने की स्थिति में भी वह अपना दायित्व निभाएगा, यह बलि का अपना निर्णय था। आगे के घटना-क्रम में शुक्र काना बन गया। शुक्र की एक आँख में खून जम गया, यह कथा मैंने सुनी थी। कविता में वह प्रसंग लाना मेरा ध्येय था, लेकिन लिखते समय मन में अन्य बातें आ गयीं।

आरसु : *आप परम्परा को मानते हैं। आधुनिक बनना भी चाहते हैं। क्या वे दोनों सहगामी बन सकते हैं?*

अक्किकतम : कुएँ में पड़े मेंढरू से आप कहेंगे कि पानी बहता है तो मेंढक इस बात को नहीं मानेगा। नदी का पानी तो नीचे की ओर बहता ही है। यहाँ सारे पौधे पुराने हैं। किन्तु जिस मिट्टी में वे खड़े हैं उसकी खाद से ही वे बड़े हो सकते हैं। अतीत, वर्तमान और भविष्य इनमें से किसी भी तत्व का निराकरण कर देने से काम नहीं चलेगा। इन सभी का सहयोग आवश्यक है। कवि तो विनय और विवेक का मार्ग अपनाता है।

आरसु : *आत्मदुःख और परदुःख दोनों आपके काव्य-विषय बने हैं। कवि-मन को किस मुहूर्त में अधिक आनन्द मिलता है?*

अक्किकतम : मेरी दृष्टि में आत्मदुःख और परदुःख की समस्या नहीं है। आत्मानुभव हो, परानुभव हो, अनुभव ही कवि का अभूतपूर्व दर्शन बनता है। यही कविता का बीज है। निमिष भर की वह रासायनिक प्रक्रिया रोशनी के रूप में बदल जाती है।

आरसु : *कविता बोध नहीं, अबोध है। यह प्रस्ताव स्पष्टीकरण माँगता है।*

अक्किकतम : कविता ब्रह्म है। कविता को अबोध कहने के पीछे यही एक कारण है। वह अबोध सत्य और सबोध सत्य के पीछे का संघर्ष है। उसकी प्रेरणा ब्रह्म से आती है। शान्ति और संघर्ष से प्रेरणा मिल सकती है। नियन्त्रण ब्रह्म के हाथ में है।

आरसु : *कहते हैं कि भारतीय दर्शन मूलतः आशावादी है, फिर भी इधर के काव्य में दुःख का महत्त्व प्रतिपादित होता है। ऐसा क्यों?*

अक्किकतम : आधुनिक सभ्यता की कमजोरी यह है कि मनुष्य केवल दो आँखों के बारे में सजग है। ललाट की आँख से भी उसे सजग होना होगा। उसको खोलने के लिए हम भस्म, सिन्दूर और चन्दन लगाते हैं। वह आँख भी खुले तभी मनुष्य अतिमानुष बनेगा। अरविन्द ने इसी स्थिति की चर्चा की थी। सामाजिक विकास के पीछे संगीत की श्रुति के समान प्रकृति की इच्छा भी गतिशील होती है। चौदह मन्वंतर तक भारत की काल गणना व्याप्त है। आज के समाज में मनुष्य अधिक स्वार्थी बनता जा रहा है। यह स्थिति मुझे परेशान करती है। इस अविनय को देखकर मैं रोता हूँ। भले इस दुःख के कारण मैं एक संन्यासी नहीं बन सकता। यह स्वार्थ आगामी पीढ़ी के मनुष्यों को अधिक स्वार्थ में धकेल देगा, यही मेरे दुख का कारण है। सर्वांतर्यामी भगवान हर संकट को दूर करने का मार्ग दिखाएगा ऐसा सोचकर मैं सिर झुकाता हूँ। पुनः मनःशान्ति प्राप्त करने की चेष्टा करता हूँ।

आरसु : *जीवन सत्यों के प्रतिपादन के लिए आप प्रकृति-सत्यों का सहारा लेते हैं। प्रकृति को खतरे से बचाने के लिए आज साहित्यकार और वैज्ञानिक एक साथ प्रयत्नरत हैं। आपकी प्रकृति दृष्टि क्या है?*

अक्कितम : प्रकृति की आँख के रूप में मनुष्य को देखना है। प्रकृति संरक्षण के पीछे यही एक उद्देश्य है। प्रकृति-बोध ने मुझे तथा हमारी पीढ़ी को विनम्र बनाया था। आज कम्यूनिज्म के अनुयायी ह्यूमनिज्म की ओर उन्मुख हो रहे हैं। प्रकृति संरक्षण का बोध उनमें भी प्रबल रहा है। उसके फलस्वरूप मन में दया उभरेगी। यह दया-दृष्टि वेद-इतिहास ग्रन्थों से मुझे मिली है। 'नमः पृथिव्यैः नमः औषधिभ्यः' वाला मन्त्र इसी की ओर इंगित करता है। ब्रह्म, अग्नि, पृथ्वी, औषधि, शब्द वाचस्पति तथा विष्णु के प्रति वहाँ आदर प्रकट किया गया है।

आरसु : *आपकी काव्य-भाषा विशिष्ट है। इसके बारे में आपका कोई विशेष दृष्टिकोण है?*

अक्कितम : भाषा एक कृत्रिम वस्तु है। संगीत के स्वर और चित्र के वर्ण के समान भाषा प्राकृतिक नहीं है। यह बात शुरू में ही मेरी समझ में आ गयी थी। बात श्रोता की समझ में अवश्य आनी चाहिए। घटाना-बढ़ाना ईक नहीं। समान मानसिक परिपक्वता होगी तभी कवि की बात को श्रोता समझेगा। वक्ता के मन की बातें श्रोता को प्रदान करने वाला उपकरण प्राप्त करना भी जरूरी है। व्याकरणादि के नियमों का ख्याल करके ही, औचित्य के अनुरूप, नियम का उल्लंघन किया जाना चाहिए, तभी भाषा का विकास सम्भव होगा। मेरे ख्याल से सारी जीवन्त भाषाओं की यही समस्या है। प्रतिपल मनुष्य का विकास होता है Expanding Universe के समान पिंड ब्रह्मांड का ही रूप है।

आरसु : *कवि इटश्शेरी के शिष्य के रूप में आपने बचपन में कविता के क्षेत्र में कदम रखा। उस युग की प्रवृत्तियाँ अलग थीं। आज आधुनिकोत्तर तथा उत्तरआधुनिकता के स्वर भी सुनाई पड़ते हैं। परिवर्तनों के युग में भी अपने स्थान पर अडिग रहने का आत्मसन्तोष क्या आपको आज मिल रहा है?*

अक्कितम : जी हाँ, मैं सन्तुष्ट हूँ। अगर इटश्शेरी के सम्पर्क में मैं न आता तो मैं कुछ भी प्राप्त न कर पाता, यह सोच आज भी मेरे मन में प्रबल है। उनके आशीर्वाद को मैं एक ज्योति की तरह आज भी मन में प्रज्ज्वलित करता हूँ। आधुनिकता कितनी भी मात्रा में आ जाए, वह गौण है। कवि के मन में एक अन्तदर्शन पैदा होना ही मुख्य बात है। मेरी राय में वही टिकाऊ है। एक अनुभूति आएगी, वह कविता बनेगी, इस तरह का अहंकार मेरे मन में नहीं है। इसलिए आज भी मैं एक कोने में स्वतन्त्र होकर बैठा हूँ।